अपठित अवबोधनम्

अध्याय — 1 अपठित गद्यांशः

स्मरणीय बिन्दु

1. सर्वप्रथम अपठित अनुच्छेद को दो-तीन बार अच्छी तरह पढ़ना चाहिए, क्योंकि अनुच्छेदों को पढ़ने से ही उनका अभिप्राय स्पष्ट होता है।
2. अनुच्छेद पढ़ने के पश्चात् प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़ना भी आवश्यक है। प्रश्नों को पढ़ने के पश्चात् ही उनके उत्तर लिखने चाहिए।
3. अनुच्छेद में दिए गए अव्ययों, विभक्तियों और प्रत्ययों को विशेष ध्यान से पढ़ें, क्योंकि इनका अर्थ पता न होने से उत्तर प्रायः अशुद्ध हो सकता है।
4. 'उचित शीर्षक' देने के लिए विद्यार्थी को अनुच्छेद पूरा पढ़कर और समझकर संक्षिप्त और सारयुक्त शीर्षक चुनना चाहिए जिसमें अनुच्छेद का पूरा भाव निहित हो।

नोट—विगत वर्ष की परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्नों को सी.बी.एस.ई. Term-II 2021-22 के अनुसार संशोधित किया गया है।

❑❑

रचनात्मकं कार्यम्

अध्याय — 2 पत्र-लेखनम्

स्मरणीय बिन्दु

1. संस्कृत भाषा में पत्र रिक्त स्थानों के रूप में होते हैं, इसलिए सर्वप्रथम पत्र के विषय का स्पष्टीकरण आवश्यक है। पत्र किसके लिए लिखा जा रहा है, इसका ज्ञान होना भी आवश्यक है।
2. विषय के स्पष्टीकरण के लिए पत्र को बार-बार पढ़ना अनिवार्य है।
3. मञ्जूषा में दिए हुए शब्दों का भी अर्थ करना चाहिए, उसके पश्चात् दिए गए शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति करनी चाहिए।
4. रिक्त स्थानों की पूर्ति के पश्चात् भी पत्र को पढ़ना अनिवार्य है।

❑❑

अध्याय — 3 चित्राधारितम् वर्णनम् अनुच्छेद लेखनम् वा

स्मरणीय बिन्दु

चित्रवर्णनः

यहाँ छात्रों से संक्षिप्त रूप से वाक्य रचना करने की अपेक्षा की जाती है। केवल वाक्य की शुद्धता देखी जाए। इस प्रश्न का मुख्य उद्देश्य, वाक्य की रचना है। वाक्य छोटे हैं, या बड़े, यह महत्त्व नहीं रखता। प्रत्येक वाक्य में आधा अंक भावार्थ के लिए तथा आधा अंक व्याकरणिक शुद्धता के लिए है। मंजूषा में सहायता के लिए शब्द दिए गए हैं। छात्रों द्वारा, वाक्यों में इनका प्रयोग किया जाना अनिवार्य नहीं है। छात्र अपने ज्ञान पर आधारित वाक्य भी बना सकते हैं। मंजूषा में दिए गए शब्दों की विभक्ति बदल कर भी वाक्य बनाए जा सकते हैं।

अनुच्छेद लेखनम्

यह विकल्प सभी के लिए है। छात्र मंजूषा में किए गए शब्दों की विभक्ति बदलकर भी वाक्य बना सकते हैं, अतः अंक दिए जाएँ। प्रत्येक वाक्य के लिए 1 अंक है। इसके मूल्यांकन के अन्य नियमों के लिए चित्रवर्णनम् के नियम देखे जाएँ।

❑❑

अध्याय — 4 हिन्दीभाषयां आङ्गलभाषयां वा संस्कृत भाषयां अनुवादः

स्मरणीय बिन्दु

हिन्दी भाषा अथवा अंग्रेजी भाषा से संस्कृतभाषा में अनुवाद करना—

एक भाषा के शब्दार्थ को दूसरी भाषा के शब्दार्थ में प्रकट करना अनुवाद कहा जाता है। हिन्दी भाषा से संस्कृत भाषा में अनुवाद करने के लिए क्रिया सदा कर्ता के अनुसार ही प्रयोग की जाती है। कर्ता जिस पुरुष और जिस वचन का होता है, क्रिया भी उसी पुरुष या वचन की होती है। प्रत्येक वाक्य के लिए 1 अंक है। अनुवाद करने के लिए सरल पर्याय शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

❑❑

पठित अवबोधनम्

अध्याय — 5 गद्यांशम् अधिकृत्य अवबोधनात्मकं कार्यम्

अष्टमः पाठः—विचित्रः साक्षी

सारांश

यह पाठ श्री ओमप्रकाश ठाकुर द्वारा रचित कथा का सम्पादित अंश है। यह कथा बांग्ला के प्रसिद्ध साहित्यकार बंकिमचन्द्र चटर्जी द्वारा न्यायाधीश रूप में दिए गए फैसले पर आधारित है। सत्यासत्य के निर्णय हेतु न्यायाधीश कभी-कभी ऐसी युक्तियों का प्रयोग करते हैं, जिससे साक्ष्य के अभाव में भी न्याय हो सके। इस कथा में भी विद्वान् न्यायाधीश ने ऐसी ही युक्ति का प्रयोग कर न्याय करने में सफलता प्राप्त की है।

पाठ में किसी निर्धन मनुष्य ने बहुत अधिक परिश्रम करके धन अर्जित किया। वह अपने बेटे को एक महाविद्यालय में प्रवेश दिलाने में सफल हो गया। उसका पुत्र छात्रावास में रहकर अध्ययन करने लगा। एक बार वह पिता अपने बेटे की बीमारी सुनकर व्याकुल हो गया और अपने बेटे को देखने के लिए धन के अभाव में बस से न जाकर पैदल ही चल दिया।

पैदल चलते-चलते उसे रात हो गई, फिर भी वह अपने गन्तव्य स्थान से बहुत दूर था। रात्रि के समय अँधेरे में यात्रा करना ठीक नहीं है, ऐसा विचार करके वह रात्रि में निवास करने के लिए किसी गृहस्थ के पास पहुँचा। एक दयालु गृहस्थ ने उसे निवास के लिए स्थान दे दिया।

भाग्य की गति विचित्र है, उसी रात उस गृहस्थ के घर में कोई चोर घुस गया और वहाँ रखी हुई आभूषण की पेटी लेकर भागा। चोर के पैरों की आवाज सुनकर अतिथि जाग गया तथा चोर का पीछा किया और पकड़ भी लिया, परन्तु विचित्र घटना घटी। चोर ही बड़े जोर-जोर से चिल्लाया 'यह चोर है, यह चोर है'। उसकी तेज आवाज सुनकर गाँव वाले अपने-अपने घरों से निकलकर वहाँ आए और उस बेचारे अतिथि को ही चोर मानकर बहुत बुरा-भला कहने लगे। यद्यपि गाँव का रक्षापुरुष ही चोर था। उसी समय सिपाही ने उस अतिथि को ही चोर बताकर कारावास में डाल दिया।

अगले दिन वह रक्षा पुरुष उसे चोरी के जुर्म में न्यायालय ले गया। न्यायाधीश बंकिमचन्द्र ने दोनों से अलग-अलग विवरण को सुना। सम्पूर्ण वृत्तान्त जानकर न्यायाधीश ने अतिथि को निर्दोष माना और सैनिक को दोषी, किन्तु उस दिन साक्ष्य के अभाव में निर्णय न हो सका। अगले दिन उन दोनों को पुनः न्यायालय में उपस्थित होने का आदेश दिया। फिर उन दोनों ने अपने-अपने पक्ष को रखा। उसी समय किसी गुप्तचर ने आकर सूचना दी कि यहाँ से करीब दो कोस दूर किसी के द्वारा एक आदमी मारा गया है उसका शव सड़क के किनारे पड़ा है। आदेश दीजिए। न्यायाधीश ने रक्षापुरुष को और अभियुक्त को शव को अदालत लाने का आदेश दिया।

आदेश पाकर दोनो वहाँ पहुँचकर लकड़ी के तख्ते पर रखे हुए कपड़े से ढके हुए शव को कन्धे पर रखकर न्यायालय की ओर चल दिए। शक्तिशाली सैनिक एवं कमजोर अभियुक्त द्वारा कंधे से शव को इतनी दूर ले जाना मुश्किल हो रहा था, अतिथि बोझ से उत्पन्न हुए दर्द से रोने लगा। उसके करुण क्रन्दन को सुनकर रक्षापुरुष ने उससे कहा कि रे दुष्ट! उस दिन मैं तेरे द्वारा आभूषणों की चोरी से रोका गया था, अब अपने कर्म का फल भोगो। इस चोरी के अपराध में तुम्हें तीन वर्ष का कठोर दण्ड मिलेगा। ऐसा कहकर वह जोर से हँसा। जैसे-तैसे उन दोनों ने शव लाकर एक चबूतरे पर रखा।

न्यायाधीश ने उन दोनों को घटना के विषय में बताने के लिए कहा। रक्षापुरुष द्वारा घटना बताते समय एक विचित्र घटना घटी कि उस शव ने ही उस ऊपरी वस्त्र को उतारकर न्यायाधीश से निवेदन किया कि मान्यवर! इस रक्षापुरुष के द्वारा मार्ग में मेरे से जो कहा गया, वह मैं बताता हूँ कि तूने मुझे पेटी की चोरी से रोका, अतः अब अपने किए गए का फल भोगो। इस चोरी के अपराध में मुझे तीन वर्ष का कठोर कारावास मिलेगा।

न्यायाधीश ने रक्षापुरुष को कारावास का आदेश देकर अतिथि (आरोपी व्यक्ति) को ससम्मान मुक्त कर दिया।

सत्य ही कहा गया है—कि जो विद्वान् बुद्धि कौशल युक्त होते हैं, वे ही वैभवशाली होते हैं। वे ही अपनी बुद्धि चतुरता से असम्भव कार्य भी सरलतापूर्वक पूरा करते हैं।

शब्दार्थाः

क्रोशितुम्	–	चीत्कर्तुम्	–	जोर-जोर से चिल्लाने
तारस्वरेण	–	उच्चस्वरेण	–	ऊँची आवाज में
अभर्त्सयन्	–	भर्त्सनाम् अकुर्वन्	–	भला-बुरा कहा
प्रख्याप्य	–	स्थाप्य	–	स्थापित करके
चौर्याभियोगे	–	चौरकर्मणि, चौर्यदोषारोपे	–	चोरी के आरोप में
नीतवान्	–	अनयत्	–	ले गया
अवगत्य	–	ज्ञात्वा	–	जानकर
दोषभाजनम्	–	दोषपात्रम्	–	दोषी
उपस्थातुम्	–	समक्षमायातुम्	–	उपस्थित होने के लिए
आरक्षिणम्	–	सैनिकम् (रक्षक पुरुष)	–	सैनिक को
आदिष्टवान्	–	आज्ञां दत्तवान्	–	आज्ञा दी
स्थापितवन्तौ	–	न्यस्तवन्तौ	–	रखा
तत्रत्यः	–	तत्र भवः	–	वहाँ का
न्यवेदयत	–	प्रार्थयत	–	प्रार्थना की
क्रोशद्वयान्तराले	–	द्वयोः क्रोशयोः मध्ये	–	दो कोस के मध्य
आदिश्यताम्	–	आदेशः दीयताम्	–	आज्ञा दीजिए
उपेत्य	–	समीपं गत्वा	–	पास जाकर
काष्ठपटले	–	काष्ठस्य पटले	–	लकड़ी के तख्ते पर
अन्वधावत्	–	अन्वगच्छत्	–	पीछे-पीछे गया
पुंसः	–	पुरुषस्य	–	मनुष्य का
प्रस्थितः	–	गतः	–	चला गया
शुभावहा	–	कल्याणप्रदा	–	कल्याणकारी
भूरि	–	पर्याप्तम्	–	अत्यधिक
निशम्य	–	श्रुत्वा, आकर्ण्य	–	सुन करके

❑❑

अध्याय — 6 पद्यांशं अधिकृत्य अवबोधनात्मकं कार्यम्

षष्ठः पाठः—सुभाषितानि

सारांश

संस्कृत साहित्य की रचनाओं के जिन पद्यों या पद्यांशों में सार्वभौम सत्य को बड़े मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है, उन पद्यों को सुभाषित कहते हैं। यह पाठ ऐसे दस सुभाषितों का संग्रह है जो संस्कृत के विभिन्न ग्रन्थों से संकलित हैं। इनमें परिश्रम का महत्त्व, क्रोध का दुष्प्रभाव, सभी वस्तुओं की उपादेयता और बुद्धि की विशेषता आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया है।

जैसे—प्रथम श्लोक में शरीर के आलस्य को छोड़कर श्रम का महत्त्व वर्णित किया गया है, क्योंकि आलस्य मनुष्य का महान शत्रु है। द्वितीय में मनुष्य की विशेषता का गुणगान, तृतीय में अकारण क्रोध न करने को कहा है क्योंकि ऐसा व्यक्ति कभी सन्तुष्ट नहीं होता, चतुर्थ में विद्वान् मनुष्य की विशेषता का, पाँचवें श्लोक में मनुष्यों के शत्रु क्रोध का वर्णन किया गया है जो शरीर को जला देता है, नष्ट कर देता है, छठे श्लोक में समान शिष्टाचार, आदतों वालों में मित्रता का भाव बताया गया है, जैसे—हिरनों के साथ हिरन, गायों के साथ गायें एवं बुद्धिमान मनुष्यों के साथ बुद्धिमान उनके पीछे-पीछे जाते हैं, उनका अनुसरण करते हैं। सातवें सुभाषित में फल और छाया प्रदान करने वाले महान् वृक्ष की परोपकारिता एवं आठवें में सोच-समझकर शब्दों को बाहर निकालना, बोलना, नवें में महापुरुषों की महानता, समान स्वभाव, सुख-दुःख में समरूपता होना एवं दसवें में विचित्र संसार में सभी वस्तुओं की उपयोगिता को सार्थक बताते हुए कहा गया है, कि कोई भी वस्तु निरर्थक (बेकार) नहीं है। सभी की अपनी-अपनी जगह महत्ता है जैसे—घोड़ा यदि दौड़ने में तेज है तो गधा भी बोझ ढोने में।

शब्दार्थाः

अवसीदति	—	दुःखम् अनुभवति	— दुःखी होता है
वेत्ति	—	जानाति	— जानता है
वायसः	—	काकः	— कौआ
करी	—	गजः	— हाथी
निमित्तम्	—	कारणम्	— कारण
प्रकुप्यति	—	अतिकोपं करोति	— अत्यधिक क्रोध करता है
ध्रुवं	—	निश्चितम्	— निश्चित रूप से
अपगमे	—	समाप्ते	— समाप्त होने पर
प्रसीदति	—	प्रसन्नः भवति	— प्रसन्न होता है
अकारणद्वेषि मनः	—	अकारणं द्वेषं करोति इति अकारणद्वेषि, तद्मनः	— अकारण ही द्वेष करने वाला मन
परितोषयिष्यति	—	परितोषं दास्यति	— सन्तुष्ट करेगा
उदीरितः	—	उक्तः, कथितः	— कहा हुआ
गृह्यते	—	प्राप्यते	— प्राप्त किया जाता है
हयाः	—	अश्वाः	— घोड़े
नागाः	—	हस्तिनः, गजाः	— हाथी
ऊहति	—	निर्धारयति	— अंदाजा लगाता है
इङ्गितज्ञानफलाः	—	इङ्गितं ज्ञानम्, इङ्गितज्ञानमेव फलं यस्याः ताः	— सङ्केतजन्य ज्ञान रूपी फल वाले
पण्डितः	—	विद्वान्, बुद्धिमान्	— बुद्धिमान्
वह्निः	—	अग्निः	— आग
दहते	—	ज्वालयति	— जलाता है

अनुव्रजन्ति	– पश्चात् गच्छन्ति	– पीछे-पीछे जाते हैं, अनुसरण करते हैं
तुरगाः	– अश्वाः	– घोड़े
सुधियः	– विद्वांसः	– विद्वान्, मनीषी
व्यसनेषु	– दुर्व्यसनेषु	– बुरी आदतों में
सख्यम्	– मैत्री	– मित्रता
सेवितव्यः	– आश्रयितव्यः	– आश्रय लेने योग्य
दैवात्	– भाग्यात्	– भाग्य से
निवार्यते	– निवारणं क्रियते	– रोका जाता है
अमन्त्रम्	– न मन्त्रं, अमन्त्रमक्षरं इति	– मन्त्रहीन
मन्त्रः	– मननयोग्यः	– मनन योग्य/सारवान्
मूलम्	– पादपानाम् अधोभागः	– जड़
औषधम्	– औषधि + अण् (वनस्पति-निर्मितम्)	– दवा, जड़ी-बूटी
योजकः	– योजयति यः, सः (युज्, ण्वुल्)	– जोड़ने वाला
सविता	– सूर्यः	– सूर्य
खरः	– गर्दभः, रासभः	– गधा

❑❑

नवमः पाठः—सूक्तयः

सारांश

सूक्ति से अभिप्राय लेखक के उस वचन से होता है, जो सब जगह प्रेरणादायक माना जाता है। सूक्त वचन ज्ञान का सार होते हैं। हमारे मनीषियों, विद्वानों, महापुरुषों एवं नीतियों के अनुभव दर्शन और परिपक्व विचारों से हमारा जीवनपथ प्रशस्त होता है। सूक्तियाँ हमारी मानसिकता व विचारों का निर्माण करती हैं। अनेक अवसरों व परिस्थितियों में ये किसी सुहृद् मित्र की भाँति हमारा पथ-प्रदर्शन करती हैं।

प्रस्तुत पाठ में संग्रहीत श्लोक मूलरूप से तमिल भाषा में रचित 'तिरुक्कुरल' नामक ग्रंथ से लिए गए हैं। तिरुक्कुरल साहित्य की उत्कृष्ट रचना है। इसे तमिल भाषा का 'वेद' माना जाता है। इसके प्रणेता तिरुवल्लुवर हैं। इनका समय प्रथम शताब्दी माना गया है। इसमें मानव जाति के लिए जीवनोपयोगी सत्य प्रतिपादित है। 'तिरु' शब्द 'श्री वाचक' है। तिरुक्कुरल शब्द का अभिप्राय है—श्रिया युक्त वाणी। इसे धर्म, अर्थ, काम तीन भागों में बाँटा गया है।

यहाँ संग्रहीत सभी श्लोकों की भाषा सरल एवं सरस होने के साथ-साथ मानव के लिए प्रेरणादायी है। यथा—प्रथम श्लोक में पिता पुत्र के लिए बाल्यावस्था में विद्यारूपी धन देता है। उसके पिता ने इसके लिए बहुत तपस्या की। यह कथन ही उसकी कृतज्ञता है, यहाँ पिता का पुत्र के प्रति कर्त्तव्य एवं पुत्र की पिता के प्रति कृतज्ञता का वर्णन बहुत ही प्रेरणाप्रद है। द्वितीय श्लोक में मन एवं वाणी की एकरूपता पर बल दिया गया है कि मनुष्य अपने मन में मधुरता, सरलता तथा कोमलता का भाव रखते हुए वैसी ही वाणी बोलना प्रारम्भ कर दें तो इसे ही महापुरुषों की दृष्टि में समता कहा गया है।

मनुष्य को धर्मानुकूल वाणी ही बोलनी चाहिए, जो इसे छोड़कर कठोर वाणी बोलना चाहता है वह अज्ञानी पके हुए फल का त्याग करके बिना पके हुए फल का उपभोग करता है। इस संसार में विद्वान् ही नेत्रों से युक्त पुरुषों के रूप में स्वीकार किए गए है। अन्य पुरुषों के मुख पर जो आँखें हैं, वे तो केवल नाम की आँखें मानी गई हैं। वास्तविक आँखें तो शास्त्रज्ञान ही है। सूक्तियों में विवेक को परिभाषित किया गया है कि किसी व्यक्ति द्वारा सोच-समझकर जो कुछ कहा जाता है, वही उसका वास्तविक निर्णय है। एक कुशल मंत्री के गुणों के विषय में बताया गया है कि जो मंत्री हर विषय पर बोल सकता है, धैर्यवान व निडर है, उसे कोई अपमानित नहीं कर सकता।

जो अपना कल्याण और अत्यधिक सुखों की इच्छा करता है, वह दूसरों का अहित कभी न करे। विद्वानों ने आचरण को ही पहला धर्म बताया है। इसलिए प्राणों से भी बढ़कर सदाचार की रक्षा करनी चाहिए।

शब्दार्थाः

तेपे	–	तपस्याम् अकरोत	–	उसने तपस्या की
अवक्रता	–	न वक्रता/ऋजुता	–	सरलता
वाचि	–	वाण्याम्	–	वाणी में
तथ्यतः	–	यथार्थरूपेण	–	वास्तव में
परुषाम्	–	कठोराम्	–	कठोर
अभ्युदीरयेत्	–	वदेत्	–	बोलना चाहिए
विमूढधीः	–	मूर्खः/बुद्धिहीनः	–	अज्ञानी/नासमझ
वाक्पटुः	–	वाचि/सम्भाषणे पटुः	–	सम्भाषण/वार्तालाप में चतुर
चक्षुष्मन्तः	–	नेत्रवन्तः:	–	नेत्रों से युक्त
वदने	–	आनने/मुखे	–	मुख पर
ईरितः	–	कथितः	–	कहा गया
परिभूयते	–	तिरस्क्रियते/अवमान्यते	–	अपमानित किया जाता है
अकातरः	–	वीरः/साहसी	–	निर्भीक
श्रेयः	–	कल्याणम्	–	कल्याण
प्रभूतानि	–	अत्यधिकानि	–	अत्यधिक
विदुषाम्	–	विद्वद्जनानाम्	–	विद्वानों का

अध्याय — 7 नाट्यांशम् अधिकृत्य अवबोधनात्मकं कार्यम्

सप्तमः पाठः—सौहार्दं प्रकृतेः शोभा

सारांश

प्रस्तुत पाठ एक-दूसरे के प्रेमपूर्ण व्यवहार का बोध कराता है। आजकल हम सब देखते हैं कि समाज में प्रायः सभी स्वयं को श्रेष्ठ समझते हुए आपस में एक-दूसरे का तिरस्कार कर रहे हैं और स्वार्थ साधन में लगे हुए हैं।

"नीचैरनीचैरतिनीचनीचैः सर्वे: उपायैः फलमेव साध्यम्" अतः समाज में पारस्परिक प्रेम भाव बढ़ाते हुए इस पाठ में पशु-पक्षियों के माध्यम से समाज में व्यवहृत आत्माभिमान को दिखाते हुए प्रकृति माता के माध्यम से अन्त में यह निष्कर्ष निकला कि प्रकृति को सभी प्रिय है।

प्रस्तुत पाठ में एक शेर विश्राम कर रहा है, उसी समय एक बन्दर आकर उसकी पूँछ को हिलाता है। क्रोधित शेर इधर-उधर दौड़ता है, गरजता है लेकिन वह बन्दर पर प्रहार करने में असमर्थ रहता है। बन्दर तो हँसता ही है, उसे देखकर अन्य पशु-पक्षी भी शेर की ऐसी अवस्था देखकर खुश होते हैं और सभी परिहास करते हुए उसे वनराज का पद त्यागने को कहते हैं।

क्रोध से शेर दहाड़ते हुए कहता है तुम सब मिलकर मुझे तंग क्यों कर रहे हो? तभी एक बन्दर कहता है राजा तो रक्षक होता है किन्तु आप तो भक्षक हो, जब स्वयं ही अपनी रक्षा नहीं कर सकते हो तो हमारी रक्षा क्या करोगे? इसलिए तुम वनराज पद के योग्य नहीं हो। कौआ और कोयल भी शेर के वनराज होने की अयोग्यता का समर्थन करते हुए स्वयं को एक-दूसरे से योग्य बताने का प्रयास करते हैं। कौआ द्वारा स्वयं को वनराज पद के योग्य बताने पर कोयल कौवे को अपवित्र, रूपहीन व गुणहीन मानकर उसे राजा मानने से मना कर देती है, किन्तु कौआ अपनी प्रशंसा से अपने को योग्य पक्षी सम्राट बताता है।

कौआ अपनी सत्यप्रियता का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहता है कि हमारा परिश्रम और एकता पूरे विश्व में प्रसिद्ध है—'झूठ बोले कौआ काटे'।

कोयल कौए से अपनी मधुर वाणी की प्रशंसा करते हुए कहती है कि मेरी मधुर आवाज सबके मन को मोह लेती है, जबकि तुम्हारी कड़वी आवाज सबके मन को ठेस पहुँचाती है।

कौए और कोयल के संवाद को सुनकर हाथी और बन्दर अपनी-अपनी पराक्रम शीलता का प्रदर्शन करते हुए वनराज पद के योग्य मानते हैं। जैसे हाथी की सूँड़ हिलाकर बन्दर वृक्ष के ऊपर चढ़ जाता है, तो हाथी अपनी सूँड़ से उस वृक्ष को ही हिलाना चाहता है, लेकिन बंदर कूद कर दूसरे पेड़ पर चला जाता है। शेर द्वारा हाथी से बन्दर की शिकायत करने पर बन्दर बड़े आत्मविश्वास के साथ कहता है, तभी तो मैं वनराज पद के योग्य हूँ।

शेर, हाथी तथा बन्दर की बातें सुनने के बाद बगुला अपने गुणों की प्रशंसा करते हुए स्वयं को वनराज बनने योग्य बताता है। वह कहता है कि मैं ही शीतल जल में बहुत समय तक स्थिर रूप से ध्यानमग्न रहता हूँ। तभी वृक्ष के ऊपर से मोर कहता है कि तुम्हारी ध्यान की अवस्था को कौन नहीं जानता अर्थात् सभी जानते हैं, तभी तो बेचारी मछलियों को धोखे से पकड़कर निर्दयता के साथ खाते हो, तुम्हें धिक्कार है। तुम्हारे कारण तो पक्षियों का कुल ही कलंकित हो गया है। तदुपरांत बड़े गर्व के साथ बन्दर कहता है शीघ्र ही मेरे राज्याभिषेक के लिए आप सब वन के प्राणी तैयार हो जाएँ।

इसी समय मयूर अपनी श्रेष्ठता प्रदर्शित करता है कि देखो-देखो मेरे सिर पर राजा के मुकुट के समान शिखा बनाकर विधाता ने ही मुझे पक्षिराज बनाया है। मेरा नृत्य तो प्रकृति की आराधना है। तीनों लोकों में मेरे समान कोई सुन्दर नहीं है। मैं तो अपनी सुन्दरता तथा नृत्य से आकर्षित करके जंगल के प्राणियों पर आक्रमण करने वालों को वन से बाहर निकाल देता हूँ।

उसी समय बाघ और चीता नदी का पानी पीने के लिए आते हैं। इनके विवाद को सुनकर कहते हैं कि 'वनराज' पद के लिए हम दोनों ही योग्य हैं परंतु बगुला द्वारा किसी पक्षी को ही वनराज बनाने का निश्चय किया गया।

इसलिए सभी ने अपनी प्रशंसा से रहित पद के लिए निर्लोभी को ही सर्वसम्मति से राजा बनाने का विचार किया, किन्तु कौए ने ऊँची आवाज में अपनी असमर्थता प्रकट करते हुए कहा कि जो स्वभाव से क्रोधी है, देखने में डरावना है, अप्रिय बोलने वाला है, ऐसे उल्लू को राजा बनाकर हमारी किस बात की सिद्धि होगी।

तभी प्रकृति माता प्रवेश करती हुई कहती है कि मैं तुम सबकी माता हूँ। तुम सब ही मुझे प्रिय हो। इस संसार में कोई भी छोटा-बड़ा नहीं है। सभी का अपना-अपना महत्व है, सभी के अपने-अपने कार्य हैं, अपना-अपना योगदान है, अत: हमें न तो किसी कार्य को छोटा या बड़ा, तुच्छ या महान समझना चाहिए और न ही किसी प्राणी को । सत्य ही कहा गया है—

यदि प्रजा सुखी है, तो राजा भी सुखी है। प्रजा का हित हो रहा है तो राजा का भी हित हो रहा है। राजा का सुख तथा हित प्रजा के सुख तथा हित में निहित है। और भी—

अथाह जल की धारा में संचरण करने वाली रोहित (रोहू) नामक बड़ी मछली गर्व से नहीं चलती जबकि अंगूठे के बराबर जल में अर्थात् थोड़े से जल में चलने वाली छोटी-सी मछली बार-बार फड़फड़ाती है। अत: आप सभी छोटी मछली की तरह एक-एक के गुणों की चर्चा छोड़कर आपस में मिल-जुलकर प्रकृति की सुन्दरता तथा वन की रक्षा के लिए प्रयास करें।

सभी प्रकृति माता को प्रणाम करते हैं और दृढ़ संकल्प के साथ मिलकर गाते हैं। आपस में झगड़ते रहने से प्राणियों की हानि है। एक-दूसरे का सहयोग करने से प्राणियों का लाभ होता है। इसलिए सभी को सहयोग की भावना के साथ मिल-जुलकर रहना चाहिए।

शब्दार्था:

धुनाति/धूनोति	— गृहीत्वा आन्दोलयति	— पकड़कर घुमा देता है
कर्णमाकृष्य	— श्रोयं कर्षयित्वा, कर्णम् + आकृष्य	— कान खींचकर
तुदन्ति	— अवसादयन्ति	— तंग करते हैं
कलरवम्	— पक्षिणां कूजनम्	— चहचहाहट को
सन्नपि	— सन् + अपि	— होते हुए भी
वित्रस्तान्	— विशेषण भीतान्	— विशेषरूप से डरे हुओं को
कृतान्त:-यमराज:	— मृत्यु का देवता यमराज	— जीवन का अन्त करने वाले
अनृतम्	— न ऋतम्, अलीकम्	— असत्य
अतिविकत्थनम्	— आत्मश्लाघा	— डींगे मारना
शृण्वन्नेवाहम्	— शृण्वन् + एव + अहम्, आकर्णयन् एव अहम्	— सुनते हुए ही मैं
पोथयित्वा मारयिष्यामि	— पीडयित्वा हानिष्यामि	— क्लेश देकर मार डालूँगा
विधूय	— आकर्ष्य	— खींचकर
विप्लवेतेह	— विप्लवेत + इह, अत्र निमज्जेत, विशीर्येत	— डूब सकती है

नौरिव	– नौ + इव, नौकाया: समानम्	– नौका के समान
सम्भारा:	– समग्रय:	– सामग्रियाँ

❑❑

अध्याय – 8 श्लोकान्वय:/भावार्थ:

स्मरणीय बिन्दु

1. सर्वप्रथम प्रश्न के वाक्य अच्छी तरह रिक्त स्थानों सहित पढ़ लें एवं सन्धि युक्त पदों को अलग-अलग करें।
2. फिर अर्थानुसार जो शब्द वहाँ आवश्यक हो उसे ही लिखें, यदि सन्धि युक्त बड़े शब्द का कोई छोटा पद पहले ही अन्वय में हो तो उसे पुन: न लिखें।
3. मञ्जूषा में दिए गए सभी शब्दों को सर्वप्रथम श्लोक में रेखाङ्कित करने के बाद ही उचित शब्द को रिक्त स्थान में लिखिए।

❑❑

अध्याय – 9 घटनाक्रमानुसारं कथालेखनम्

स्मरणीय बिन्दु

1. सर्वप्रथम छात्र घटनाक्रम को ध्यानपूर्वक पढ़ें और घटना की सम्पूर्ण जानकारी लें।
2. तत्पश्चात पाठ की घटना / कहानी के अनुसार प्रश्न पर ही पेंसिल से संख्या क्रम अंकित करें, जब सम्पूर्ण घटना/कहानी ठीक क्रम में व्यवस्थित हो जाए तभी उत्तर-पुस्तिका में अंकित करें अथवा लिखें।
3. इससे अशुद्धियाँ होने का भय नहीं रहता है। एक भी गलत क्रम से पूरा घटनाक्रम गलत हो सकता है।

❑❑